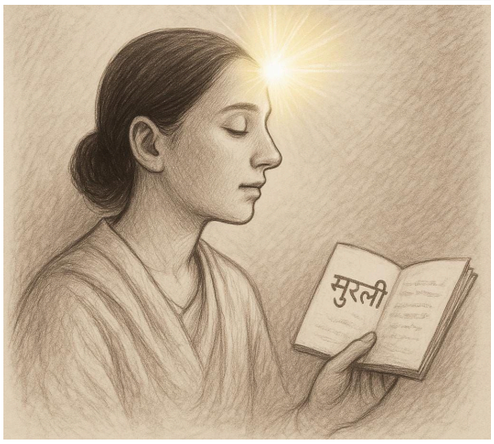


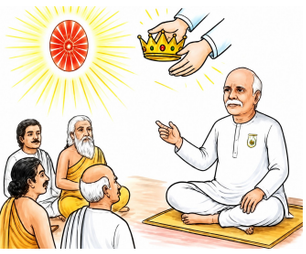
"मीठे बच्चे - यही पढ़ाई है जो तुम्हें नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनाती है, इसलिए पढ़ाई पर बहुत-बहुत ध्यान देना है"








**प्रश्नः- बाप द्वारा बच्चों को कौन सा वर्सा मिलता है जो किसी तीर्थ या जंगल में जाने से नहीं मिल सकता?**



**उत्तरः-** बाप द्वारा बच्चों को सुख-शान्ति-सम्पत्ति का वर्सा मिलता है, जो कहीं भी नहीं मिल सकता है। मनुष्य शान्ति के लिए जंगल में जाते हैं, परन्तु तुम जानते हो शान्ति तो हम आत्माओं का स्वधर्म है।

**गीतः- तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया...** Click

तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया है
तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया है
ज़मीं तो ज़मीं आसमाँ पा लिया है
तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया है
तुम्हें पाके हमने

मिटा न सकेगी जिसे अब ख़िज़ाँ भी
जला न सकेंगी अब बिजलियाँ भी
मोहब्बत का वो आशियाँ पा लिया है
तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया है
तुम्हें पाके हमने

ज़माने के ग़म प्यार में ढल गए हैं
ज़माने के ग़म प्यार में ढल गए हैं
उम्मीदों के लाखों दिए जल गए हैं
उम्मीदों के लाखों दिए जल गए हैं
के जबसे तुम्हें मेहरबाँ पा लिया है
तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया है
तुम्हें पाके हमने

जहाँ से मोहब्बत की राहें मिली हैं
वहीं से मेरी गर्दिशें थम गई हैं
न बिछड़ेंगे हम कारवाँ पा लिया है
तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया है
तुम्हें पाके हमने

खिजा (या ख़िज़ाँ - Khizan/ Khiza) का मुख्य अर्थ पतझड़ का मौसम होता है, जब पेड़ों के पत्ते झड़ जाते हैं।

गर्दिश (Gardish) का अर्थ चक्कर, घूमना, बुरा समय या विपत्ति होता है। यह मूल रूप से एक फ़ारसी शब्द है जो हिंदी और उर्दू दोनों में उपयोग किया जाता है।

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा

**ओम् शान्ति।** बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं क्योंकि तुम अभी धनके बने हो (Parented (who have mother-Father)) वाह रे मैं... । बाकी जो भी मनुष्यमात्र हैं, वह निधनके (orphans) हैं। धनी (V/S) एक बाप को ही कहा जाता है। घर में जब लड़ते हैं तो कहा जाता है तुम्हारे कोई धनी-धोरी नहीं है क्या? अभी सारी दुनिया के मनुष्य मात्र लड़ते झगड़ते रहते हैं। एक दो का खून भी कर देते हैं। बाप ही आकर समझाते हैं - यह काम तो महाशत्रु है, **जिससे सभी आदि-मध्य-अन्त दुःख पाते हैं।** तुम बच्चे जानते हो अभी हम बेहद बाप से बेहद सुख का वर्सा ले रहे हैं। मनुष्य भल कहते हैं हमको शान्ति चाहिए, परन्तु शान्ति क्या है, कहाँ से मिलती है, क्या जंगल में जाने से शान्ति मिलेगी? सुख-शान्ति कब और कौन देते, तीर्थों पर किसलिए जाते? यह भी कोई जानता नहीं। सिर्फ सुना है कि भक्ति करने से भगवान मिलेगा। जानते भगवान को भी नहीं। बाप कहते हैं मैं आकर तुम बच्चों को सुख-शान्ति देता हूँ। अब सुख-शान्ति, सम्पत्ति किसके पास नहीं है। देने वाले को भी कोई जानता नहीं। बाप आकर समझाते हैं तुम गाते भी हो, दुःख हर्ता सुख कर्ता। गांधी जी भी पुकारते थे कि हे पतित-







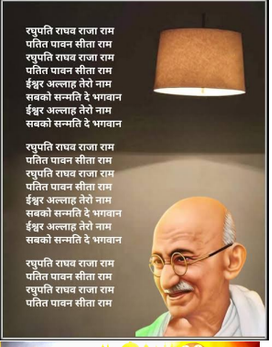










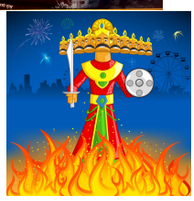



09-11-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



पावन आकर पावन बनाओ। गाते हैं पतित-पावन सीताराम, परन्तु अर्थ का पता नहीं। भक्ति क्यों करते, उससे क्या मिलेगा। कुछ भी जानते नहीं। यह भक्ति की भी ड्रामा में नूँध है। द्वापर से रावणराज्य शुरू होता है। मनुष्य यह नहीं जानते कि रावण क्या चीज़ है! कब तक रावण को जलाते रहेंगे ! भल उनका जन्म कब हुआ, रावण के भी बुत को बनाकर जलाते हैं। आत्मा कभी जलती नहीं। यह सब बातें तुम बच्चे ही जानते हो। आज से 5 हजार वर्ष पहले भारत स्वर्ग था। इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। लक्ष्मी-नारायण को ही भगवती-भगवान कहा जाता है। फिर त्रेता में राम का राज्य था। उन्हों को यह राज्य कैसे मिला, फिर वह राज्य कहाँ गया, यह कोई नहीं जानते अर्थात् रचना के आदि-मध्य-अन्त को कोई जानता नहीं। तुम इस नॉलेज से स्वर्ग के मालिक बनते हो। स्कूल में पढ़ाई से कोई वकील, जज बनते हैं, लक्ष्मी-नारायण नहीं। यह किस पढ़ाई से पद पाया! यह किसको पता नहीं। भगवानुवाच मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूँ। ऐसा कोई नहीं होगा जो कहे कि मैं तुमको यह बनाता हूँ। तुम बच्चे जानते हो यह








**नेती - नेती**



Multi Trillion dollar Question..



चढ़ाओ नशा...

Personal Experience:

ज्ञान में आने से पहले हमें यह प्रश्न मन में कई बार उत्पन्न होता था कि इन्होंने(श्री कृष्णने)ऐसे क्या कर्म किए जो यह देवता बने? परंतु, जवाब तो कौन देगा?
फिर अपने आप ही मन ही मन यह सोचते थे कि तू भी पागल है, ये क्या व्यर्थ सोच रहा है, वह तो भगवान है। और, तुझे कोई काम धंधा नहीं है जो तू फालतू कुछ भी मन ही मन में सोचता रहता है।
लेकिन फिर मीठे बाबा मिले, ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला तो सब पता चल गया कि वो कैसे देवता बने? और साथ में ये भी पता चला कि यह सारी सृष्टि पुरुषार्थ के आधार पर ही चलती है कुछ भी, किसी को भी ऐसे ही नहीं मिलता।





**लक्ष्मी-नारायण की डिनायस्टी इस पढ़ाई से बनी है।**

But we know, How Lucky & Great we are..!









दुनिया इन बातों को नहीं जानती। सतयुग के लिए भी कह देते लाखों वर्ष, तो यह कैसे जाने कि लक्ष्मी-नारायण कहाँ गये? देख भी रहे हैं कि भारत में ही लक्ष्मी-नारायण के बहुत चित्र हैं। ढेर मन्दिर बने हुए हैं। समझते हैं इनसे हमको धन मिलेगा। महालक्ष्मी से हर दीपमाला पर धन मांगते हैं, परन्तु साथ में जरूर नारायण भी होगा। दीपमाला पर पूजा करेंगे फिर उन्हों की अल्पकाल सुख की भावना पूरी होती है तो समझते हैं लक्ष्मी से धन मिलता है। वास्तव में लक्ष्मी-नारायण दोनों हैं। लक्ष्मी, महालक्ष्मी कोई अलग-अलग नहीं हैं, यह बातें मनुष्य नहीं जानते। बाबा ही समझाते हैं। आजकल मनुष्य तो कह देते ईश्वर पत्थर भित्तर में है। बाप कहते हैं सब पत्थरबुद्धि हैं। पारसबुद्धि तो सतयुग में हैं। जब लक्ष्मी-नारायण का राज्य था तो सोने हीरे के महल थे। 5 हजार वर्ष की बात है। शास्त्रों में कल्प की आयु लाखों वर्ष लिख दिया है। बाप कहते हैं यह भक्ति मार्ग से सीढ़ी नीचे उतरनी पड़ती है। ड्रामा अनुसार जब दुर्गति को पायें तब मैं आऊं और आकर नई दुनिया बनाऊं। अभी तुम बच्चे नई



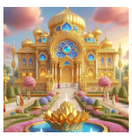


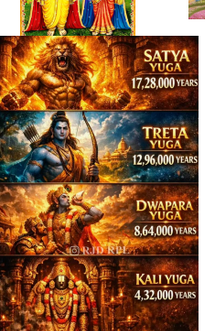








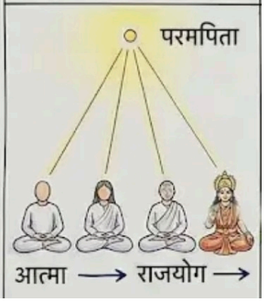



















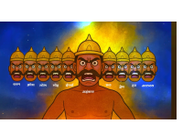
दुनिया के मालिक बनने के लिए राजयोग सीख रहे हो। तुम जानते हो इस महाभारत लड़ाई से पुरानी दुनिया का विनाश होगा। यह ड्रामा बना बनाया है। Ready - Made since Eternal Time




सतयुग में देवी-देवताओं का राज्य था। उनको 5 हजार वर्ष हुए। 2500 वर्ष सूर्यवंशी चन्द्रवंशी राजधानी चली। बाकी द्वापर से रावणराज्य शुरू हुआ। मनुष्य पतित बनते जाते हैं। परन्तु उन्हों को यह पता नहीं तो हमको पतित किसने बनाया? हम पावन थे, पतित कैसे बनें? बाप आकर समझाते हैं।




2500 yr





रावणराज्य शुरू होने से तुम पतित बनते जाते हो। रावण के जन्म को अभी 2500 वर्ष हुए। शिवबाबा के जन्म को 5 हजार वर्ष हुए। उनको राम, उनको रावण राज्य कहा जाता है। वास्तव में राम कहना नहीं चाहिए। आजकल मनुष्यों के नाम रामचन्द्र, कृष्ण चन्द्र रखते हैं।












5 हजार वर्ष पहले भारत सोने की चिड़िया थी। उनको गोल्डन एजड वर्ल्ड कहा जाता है। वैकुण्ठ था, परन्तु कहाँ था यह नहीं जानते। आत्मा क्या है,




परमधाम जाना है क्योंकि ड्रामा का चक्र अब पूरा होता है। यह भी तुम जानते हो कि यह बहुत गन्दी दुनिया है। परमात्मा को तो कोई भी नहीं जानते, न जानेंगे इसलिए कहा जाता है विनाश काले विपरीत बुद्धि। उन्हों के लिए तो यह नर्क ही स्वर्ग के समान है। उन्हों की बुद्धि में यह बातें बैठ न

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.Imp.



19-11-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

सकें। तुम बच्चों को यह सब विचार सागर मंथन करने के लिए बहुत एकान्त चाहिए। यहाँ तो

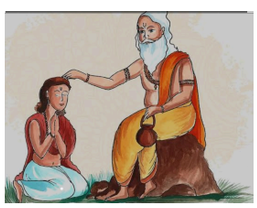
सोचो तुमको कौन मिला है,
कौन तुम्हारा साथी है।
सारे संसार का सार हमें मिल गया है।

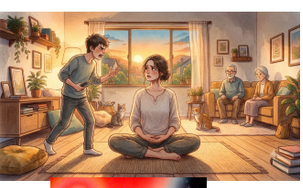
ये पक्का समझ लो...
अभी ये समय तुम्हारे हाथ से चला गया तो फिर कभी भगवान को नहीं पा सकोगे।
फिर कल्प के अंत में जब पद का साक्षात्कार हो तब और भक्ति में रोते रहना उसको पाने के लिए...
पर हाथ कुछ नहीं आएगा। और वो भी कल्प कल्पान्तर अर्थात हमेशा हमेशा के लिए।
इसीलिए, अभी नहीं तो कभी नहीं...



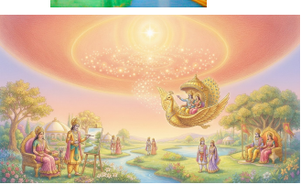
नेती - नेती

चढ़ाओ नशा...





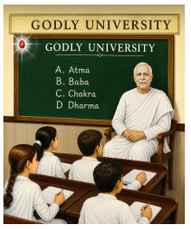






परमात्मा क्या है, सृष्टि क्या है। कुछ भी नहीं जानते। तब उनको कहा जाता है तुच्छ बुद्धि। ऋषि मुनि रचता और रचना के आदि मध्य अन्त को नहीं जानते। तब तो कहते हैं नेती-नेती, न बाप को, न वर्से को जानते। बाप द्वारा जो वर्सा विश्व की राजाई मिलती है उनको भी नहीं जानते। अभी सारे सृष्टि के आदि मध्य अन्त को तुम जानते हो, तो तुम डबल आस्तिक ठहरे। लोगों को तो यह भी मालूम नहीं कि शान्ति किससे और कहाँ से मिलेगी। संन्यासियों के पास जाकर कहते हैं हमको शान्ति चाहिए। अब हमको शान्ति यहाँ कहाँ से आ सकती है? कर्म तो करना है ना? शान्ति तो मिलेगी - शान्तिधाम में। अगर घर में एक अशान्त होगा तो भी सारे घर को अशान्त कर देगा। शान्ति मिलती है - स्वीट होम में। फिर वहाँ से हम आत्माओं को बाप भेज देते हैं पार्ट बजाने के लिए नई दुनिया में। बाप दोज़क में थोड़ेही भेजेगा। शान्तिधाम से सुखधाम में जायेंगे। तुम बच्चे जानते हो यह भगवान की पाठशाला है। यह कोई सतसंग नहीं है। यहाँ भगवानुवाच है बच्चों प्रति। निराकार शिवबाबा शरीर में प्रवेश कर तुम बच्चों से बात करते हैं। आत्मा भी शरीर में है ना। आत्मा को

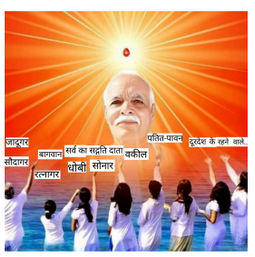






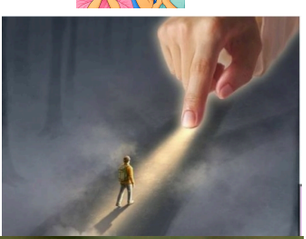

09-11-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा"

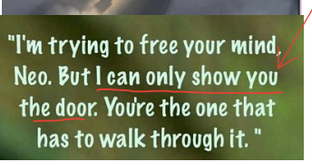
जब कर्मेन्द्रियाँ मिलती हैं तब बोलती हैं, सुनती हैं। अब आत्माओं को बाप बैठ पढ़ाते हैं, परमात्मा को बुलाते हैं हे पतित-पावन... हे सद्गति दाता, लिबरेटर, गाइड परन्तु यह नहीं जानते कि कैसे लिबरेट कर फिर गाइड बनकर कहाँ ले जायेंगे। सिर्फ चिल्लाते रहते हैं। अब गॉड फादर आया है। तुम बच्चों को गाइड कर रहे हैं। खुद तुमको शान्तिधाम में ले जाते। फिर तुम आपेही (Automatically) सुखधाम में चले जायेंगे। बाप एक ही बार आकर सबका गाइड बनता है। फिर नई दुनिया में बाप गाइड नहीं करेंगे। इस समय मनुष्य सब पतित होने के कारण यह नहीं जानते कि हम वापिस घर कैसे जायें, उड़ नहीं सकते। भक्ति बहुत करते हैं, वहाँ जाने के लिए। परन्तु यह नहीं जानते कि हम पतित हैं इसलिए जा नहीं सकते। पतित-पावन बाप आकर जब पावन बनाये तब हम जा सकें। अब बाप पावन बनने की (चढ़ाओ नशा...) तुमको युक्ति बताते हैं, सबको पतित से पावन बनना ही है। अभी कितने ढेर मनुष्य हैं। सतयुग में जब देवताओं का राज्य है तो 9 लाख (only) नये झाड़ में होते हैं। पहले थोड़े पत्ते होते हैं ना। फिर बड़ा होता जाता है। पहले एक ही धर्म वाले हैं। तुम अभी अपने को नर्कवासी नहीं समझेंगे,












Shiv baba: i can only show you the door..
मैं किसी पर भी ताज नहीं रखता।
अगर तुम मेरी श्रीमत पर चलेंगे तो राजा बनेंगे, नहीं चलेंगे तो प्रजा।
और वो भी कल्प कल्पान्तर...(forever)
अब ये तुम पर निर्भर करता है कि तुम्हें क्या बनना है...?





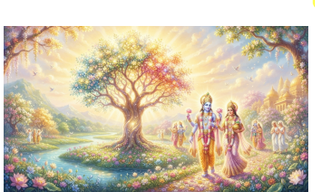




पावन तो बनना ही पड़ेगा
चाहे प्यार से (मीठे बाबा की श्रीमत पर चलके)..
चाहे मार से..

Choice is All yours

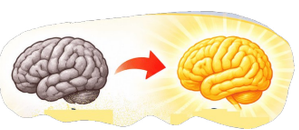


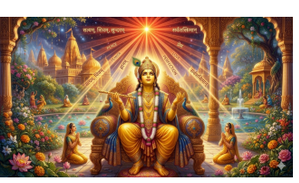




बाकी सब हैं नर्कवासी। परन्तु अपने को समझते नहीं हैं। इस समय सूरत तो सबकी मनुष्य की हैं, सीरत बन्दर जैसी है। बड़े-बड़े राजायें भी लक्ष्मी-नारायण के चरणों में झुकते हैं। अब वह कोई पतित को पावन बनाने वाले नहीं हैं अथवा वह कोई रहमदिल थोड़ेही हैं। जब कोई दु:खी हों तो उन पर रहम किया जाए। रहमदिल एक बाप ही है। बाप ही आकर पत्थर बुद्धियों को पारसबुद्धि बनाते हैं। अभी तुम देवता बन रहे हो। यह है ही नर से नारायण बनने की पाठशाला। यह राजयोग है। ऋषि मुनि यह नहीं जानते कि गीता का राजयोग किसने सिखाया। गीता को बिल्कुल खण्डन कर दिया है। समझते हैं - श्रीकृष्ण ने राजयोग सिखाया था। कहते हैं श्रीकृष्ण भगवानुवाच मनमनाभव। अब श्रीकृष्ण तो परमात्मा है नहीं। वह तो सतयुग का प्रिन्स है। जो ही संगमयुग पर राजयोग सीखकर राजाई प्राप्त करते हैं। उनको फिर भगवान बना दिया है। ढेर मनुष्य गीता सुनते हैं। परन्तु एक को भी पता नहीं कि गीता का भगवान शिव है, न कि श्रीकृष्ण है। कह देते हैं सब एक ही हैं। ऐसे मनुष्यों से भी माथा मारना पड़ता है। 63 जन्मों से समझते आये हैं कि श्रीकृष्ण भगवान

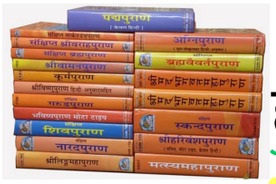








है। द्वापर से शास्त्र बने हैं। जरूर पहले-पहले गीता बनी होगी। यह शास्त्र सब हैं भक्ति मार्ग के। ज्ञान मार्ग का एक भी शास्त्र नहीं है। गीता है नम्बरवन। बाद में यह वेद उपनिषद बने हैं। वह भी गीता के सब बाल बच्चे हैं। वह पढ़ते-पढ़ते नीचे उतरते आये हैं। अब 84 जन्म पूरे हुए। अब चलना है पहले नम्बर पर। अब तुम फिर Again सतयुगी लक्ष्मी-नारायण बनने के लिए यहाँ पढ़ने आये हो। सब तो लक्ष्मी-नारायण नहीं बनेंगे, यह राजधानी स्थापन हो रही है। परन्तु किसने राजधानी स्थापन की, यह किसकी बुद्धि में नहीं आयेगा। कलियुग में इतने ढेर मनुष्य हैं जो खाने के लिए अनाज भी नहीं मिलता और सतयुग में सिर्फ लक्ष्मी-नारायण की राजधानी होगी। यहाँ देखो कितने धर्म हैं। सामने महाभारी महाभारत लड़ाई भी खड़ी है, फिर भी मनुष्यों की आंखे नहीं खुलती हैं। तो यह महाभारी लड़ाई कल्प पहले भी लगी थी, उनके बाद क्या हुआ, कुछ नहीं जानते। यह सब बातें तुम ब्राह्मण ब्राह्मणियाँ ही जानते हो। तुमको बाप ने ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट किया है। भगवान तुमको पढ़ाकर यह लक्ष्मी-नारायण बनाते हैं, तो अच्छी तरह





84 जन्मों की सीढ़ी: सतो से तमो, स्वर्गवासी से नर्कवासी बनने का क्रम।

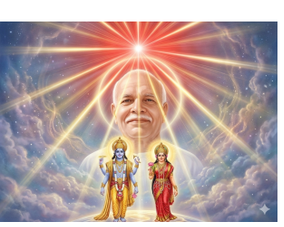


But we know, How Lucky & Great we are..!





चढ़ाओ नशा...
डूब जाओ इस नारायणी नशे में...

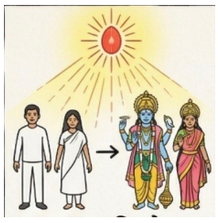




पढ़ना चाहिए। सिर्फ बाप को और नई दुनिया को याद करो तो तुम नई दुनिया में चले जायेंगे। फिर अगर अच्छी तरह पढ़ेंगे और पढ़ायेंगे तो राजा रानी बन सकते हैं। जितनी रूहानी सर्विस करेंगे। तुम हो रूहानी सोशल वर्कर। बाकी सारी दुनिया है जिस्मानी सोशल वर्कर। तुम आत्माओं को बाप रोज़ ज्ञान देते हैं। आत्माओं की सेवा करते हैं ना। उनको कहा जाता है आत्माओं की सेवा, जो सिखलाते भी हैं स्पीचुअल फादर। यह है मनुष्य को देवता बनाने की पाठशाला। बनेंगे भी जरूर। **जब तुम पढ़कर तैयार हो जायेंगे और विनाश शुरू होगा** फिर तुम भी जायेंगे। कहते हैं ना राम गयो, रावण गयो... सिर्फ थोड़े रह जाते हैं जो फिर **अदली-बदली होते रहते हैं**। फिर तुम आयेंगे स्वर्ग में। तुम्हारे लिए अब नई दुनिया स्थापन हो रही है, तुम स्वर्गवासी बनने के लिए पढ़ रहे हो। यह नर्क है। अब तुम हो संगम पर। अभी तुम ब्राह्मण ब्राह्मणियाँ नहीं बनेंगे तो वर्सा ले नहीं सकेंगे। वर्सा ब्राह्मणों को मिलता है, जो एक बाप के सिवाए और कोई भी देहधारी को याद नहीं करते हैं। बाकी कुछ न कुछ सुना तो प्रजा में आ जायेंगे। अच्छा!



इतना दुलार मां की ममता
हम प्यार पिता का पाते है
शिक्षा देते, रक्षा करते
अपना सर्वस्व लुटाते है
प्यारी मुरली प्रति दिन हमको
आती प्रभु प्रेम की भाती है
भगवान हमारा साथी है





**Attention..!**

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा




मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।



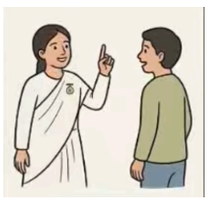



## धारणा के लिए मुख्य सारः-









1) रूहानी सोशल वर्कर बन पढ़ना और पढ़ाना है। बाप के साथ-साथ आने वाली नई दुनिया को भी याद करना है।



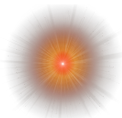
2) बाप समान रहमदिल बन सबको पारसबुद्धि बनाने की सेवा करनी है।

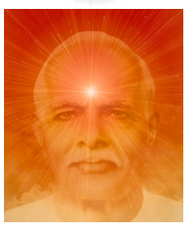






# वरदान: निराकार सो साकार-इस मन्त्र की स्मृति से सेवा का पार्ट बजाने वाले रूहानी सेवाधारी भव



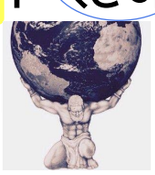







जैसे बाप निराकार सो साकार बन सेवा का पार्ट बजाते हैं ऐसे बच्चों को भी इस मन्त्र का यंत्र स्मृति में रख सेवा का पार्ट बजाना है।

यह साकार सृष्टि, साकार शरीर स्टेज है। स्टेज आधार है, पार्टधारी आधारमूर्त हैं, मालिक हैं।



इस स्मृति से न्यारे बनकर पार्ट बजाओ तो सेन्स के साथ इसेंसफुल, रूहानी सेवाधारी बन जायेंगे।






**स्लोगन:-** साक्षी बन हर खेल को देखने वाले ही साक्षी दृष्टा हैं।








olden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा


बाप समान

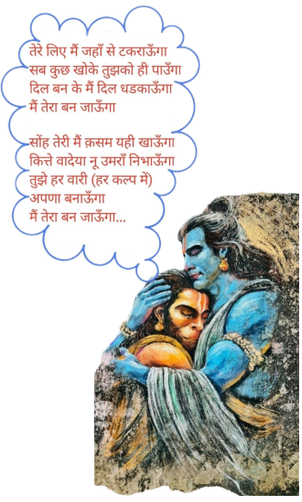

# ये अव्यक्त इशारे –

## ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो



आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हाँक तें काँपै॥






Extreme — Extreme

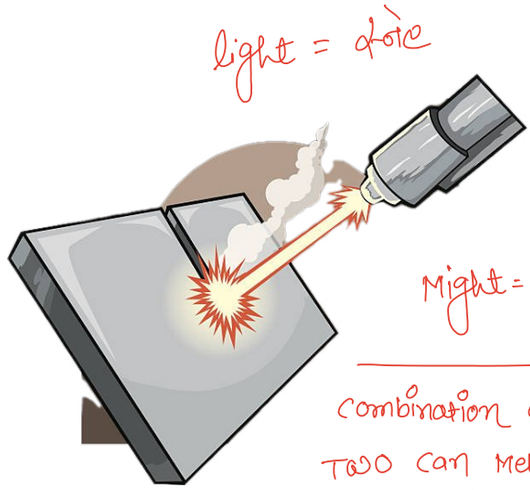
स्नेह और शक्ति जब इन दोनों का मिलन हो जाता है तो अवस्था अति न्यारी और अति प्यारी होती है,

जिसके लिए स्नेह है उसके समान बनना है, यही स्नेह का सबूत है।

लेकिन सिर्फ स्नेह रखने से सम्पूर्ण नहीं बनेंगे, *Mind very well...*

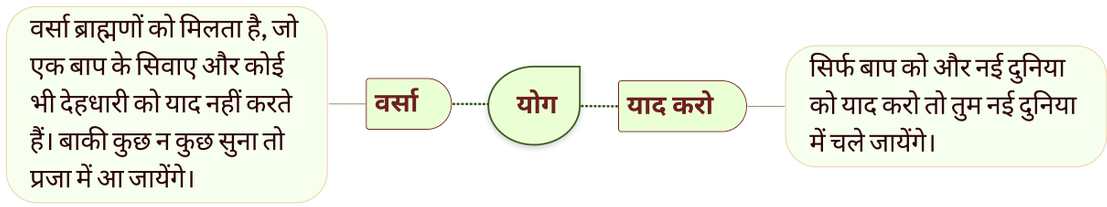
स्नेह के साथ-साथ शक्ति भी होगी तो खुद सम्पूर्ण बन औरों को भी सम्पूर्ण बनायेंगे।

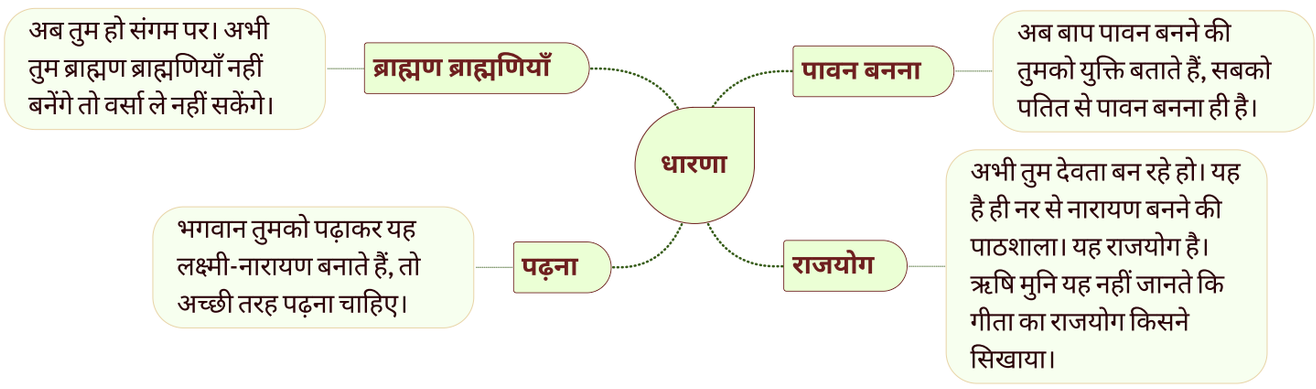


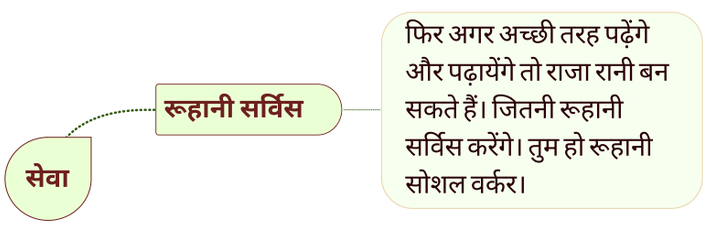


# Sakar Murli:- 09/11/26

- ज्ञान
  - आत्मा
    - आत्मा कभी जलती नहीं।
  - परमात्मा
    - गाइड
      - बाप एक ही बार आकर सबका गाइड बनता है। फिर नई दुनिया में बाप गाइड नहीं करेंगे।
    - स्पीचुअल फादर
      - तुम आत्माओं को बाप रोज़ ज्ञान देते हैं। आत्माओं की सेवा करते हैं ना। उनको कहा जाता है आत्माओं की सेवा, जो सिखलाते भी हैं स्पीचुअल फादर।
  - ड्रामा
    - भक्ति क्यों करते, उससे क्या मिलेगा। कुछ भी जानते नहीं। यह भक्ति की भी ड्रामा में नूँध है।
  - ब्रह्मा
    - तुमको बाप ने ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट किया है।
  - Special point
    - यह है मनुष्य को देवता बनाने की पाठशाला। बनेंगे भी जरूर। जब तुम पढ़कर तैयार हो जायेंगे और विनाश शुरू होगा फिर तुम भी जायेंगे।
  - Comparison
    - पत्थरबुद्धि/पारसबुद्धि
      - बाप कहते हैं सब पत्थरबुद्धि हैं। पारसबुद्धि तो सतयुग में हैं।
  - शान्ति
    - शान्ति तो मिलेगी - शान्तिधाम में। अगर घर में एक अशान्त होगा तो भी सारे घर को अशान्त कर देगा। शान्ति मिलती है - स्वीट होम में।


वर्सा ब्राह्मणों को मिलता है, जो एक बाप के सिवाए और कोई भी देहधारी को याद नहीं करते हैं। बाकी कुछ न कुछ सुना तो प्रजा में आ जायेंगे।
वर्सा
योग
याद करो
सिर्फ बाप को और नई दुनिया को याद करो तो तुम नई दुनिया में चले जायेंगे।


अब तुम हो संगम पर। अभी तुम ब्राह्मण ब्राह्मणियाँ नहीं बनेंगे तो वर्सा ले नहीं सकेंगे।
ब्राह्मण ब्राह्मणियाँ
पावन बनना
अब बाप पावन बनने की तुमको युक्ति बताते हैं, सबको पतित से पावन बनना ही है।
धारणा
भगवान तुमको पढ़ाकर यह लक्ष्मी-नारायण बनाते हैं, तो अच्छी तरह पढ़ना चाहिए।
पढ़ना
राजयोग
अभी तुम देवता बन रहे हो। यह है ही नर से नारायण बनने की पाठशाला। यह राजयोग है। ऋषि मुनि यह नहीं जानते कि गीता का राजयोग किसने सिखाया।


रूहानी सर्विस
फिर अगर अच्छी तरह पढ़ेंगे और पढ़ायेंगे तो राजा रानी बन सकते हैं। जितनी रूहानी सर्विस करेंगे। तुम हो रूहानी सोशल वर्कर।
सेवा

If you wish to stay connected, Here is the link










BKdrluhar

All वरदान slogans Oct 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Oct 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अगर आप को Mind Maps के रिलेटेड कोई Feedback या Suggestion भेजना है तो Click